उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
दिगंत- भाग-2, गद्य खण्ड
शीर्षक - उसने कहा था
लेखक - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

Date —— Page ——

सप्रसंग व्याख्या-

"बड़े-बड़े शहरों के इक्के गाड़ीवालों की जुबान के कोड़ों से जिसकी पीठ छिल गयी है और कान पक गए हैं, उनसे प्रार्थना है कि अमृतसर के बंबूकार्ट वालों की बोली का ~~मरहम~~ मरहम लगावें।"

प्रसंग-

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत- भाग-II के उसने कहा था पाठ से ली गई है। इसके लेखक हिन्दी के महान कहानीकार चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से गुलेरी जी ने बंबूकार्ट वालों की बोलियों पर तीखा व्यंग्य किया है। अमृतसर के बंबूकार्ट वालों की बोलियाँ पर कहानीकार ने ध्यान आकृष्ट किया है, ये पंक्तियाँ उसी प्रसंग की है।

अमृतसर में बंबूकार्ट वाले बड़ी मीठी बोली में कटु बात को भी मधुर ढंग से कहते हैं। इनकी बोलियाँ सुनने में तो प्यारी लगती है किन्तु उनमें व्यंग्य की धार बड़ी पैनी होती है। दूसरे शहर के इक्के वाले जहाँ घोड़े को गालियाँ देते हैं, पैदल चलने वालों की आँखे न होने पर तरस खाते हैं और क्षोभ प्रकट करते हैं वहाँ अमृतसर के इक्के वाले बचो खालसा जी, हटो भाईजी, ठहरना भाई-जी, आने दो लाला जी, हटो बाछा जैसे मधुर शब्दों का संबोधन करते हुए पैदल चलने वाले को मार्ग से हटाते हुए गाड़ी आगे बढ़ाते हैं। दूसरे शहर में वे कोड़ों से घोड़ों की पिटाई करते हुए पीठ को घायल कर देते हैं। उनकी कर्कश बोलियों से सुनने-वाले के कान पक जाते हैं वहाँ अमृतसर वालों की मधुरवाणी द्वारा व्यक्त संबोधन सुनने में बड़ा प्यारा लगता है।

इन पंक्तियों में कहानीकार ने बड़े-बड़े शहरों के इक्केवालों की बदजुबानी की मार से जख्मी हुए लोगों को अमृतसर के बंबूकार्ट वालों की बोलियाँ रूपी मरहम को अपने घायल मन पर लगाने का संकेत किया है। बंबूकार्ट वालों की बोली अत्यन्त प्रिय, मनभावन और मधुर होती है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 05/06/21
रा०अ०सं० महाविद्यालय सेना, पूर्णिया

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'पथिक' काव्य

कवि - श्रीराम नरेश त्रिपाठी

महत्वपूर्ण अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या

"एक व्यक्ति निर्दयी निरंकुश बन बैठा अधिकारी।
शासन है कर रहा तुम्हीं पर लेकर शक्ति तुम्हारी।।
अत्याचार स्वयं अपने ही ऊपर तुम करते हो।
अपने हाथों ही अपने को मार-मार करते हो।।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'पथिक' खण्ड-काव्य से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रकृति के महानकवि श्री रामनरेश त्रिपाठी जी है। इस पद में कवि ने राजा के निरंकुशता का विस्तार से वर्णन किया है।

प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि कहता है कि एक राजा निरंकुश बनकर जो प्रजा पर अत्याचार कर रहा है, वह प्रजा की सहायता से ही कर रहा है। प्रजा यदि राजा का साथ देना छोड़ दे तो राजा अकेला क्या कर सकता है। अन्यायी, अधर्मी राजा का साथ देना पाप है। कवि कहता है कि प्रजा स्वयं इसके लिए जिम्मेवार है। प्रजा अपने हाथों से ही अपने लोगों को मारने के लिए तैयार है। जब तक प्रजा इस पाप से निवृत्त नहीं होगी तब-तक उसका कष्ट दूर नहीं हो सकता है।

कवि का कहने का अभिप्राय यह है कि राजा जब निरंकुश हो जाय और आम प्रजा के ऊपर अत्याचार करना शुरु कर दे तो ऐसी स्थिति में प्रजा को राजा का साथ नहीं देना चाहिए। समस्त प्रजा को एकजुट होकर उसका विरोध करना चाहिए। परन्तु विरोध अहिंसात्मक होना चाहिए। अहिंसा के सिद्धान्त पर चलकर ही हम निरंकुश शासक से मुक्ति पा सकते हैं। गाँधीवादी दर्शन भी यही सन्देश देता है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
[redacted]
एसो० प्रो० हिन्दी 05/06/21
रा० उ० सं० महाविद्यालय सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अनिवार्य - पत्र

जयद्रथ - वध - पंचम सर्ग

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

"आगे न अर्जुन बढ़ सके आचार्य-बल वातूल से;
कल्लोल लोल-पयोधि के ज्यों बढ़ न सकते कूल से।
बोले वचन तब पार्थ से हरि - व्यर्थ यह संग्राम है
है काल थोड़ा और करना बहुत भारी काम है।"

भावार्थ

प्रस्तुत पद्यांश पंचम सर्ग से उद्धृत है। पाण्डवों और कौरवों की सेना में घमासान युद्ध चल रहा है। गुरु द्रोणाचार्य ने आज के युद्ध में अर्जुन को आगे बढ़ने से रोक देते हैं। अर्जुन गुरु द्रोणाचार्य के भावों को भाँप कर कृष्ण से कहते है कि आज मेरे लिए युद्ध में आगे बढ़ना कठिन प्रतीत हो रहा है।

कवि कहना चाहता है कि अर्जुन आचार्य द्रोणाचार्य की शक्ति रूपी बवंडर के कारण आगे बढ़ने में अपने को असमर्थ महसूस कर रहे हैं। जिस प्रकार किनारे पर उत्पन्न होने वाली लोल लहरें वहीं उत्पन्न होकर वहीं नष्ट हो जाती हैं और आगे नहीं बढ़ पाती है, ठीक उसी प्रकार अर्जुन की शक्ति भी वहीं नष्ट हो जा रही है आगे नहीं बढ़ पाती है। तब भगवान ने अर्जुन से कहा कि "यह युद्ध व्यर्थ है। इस समय बहुत थोड़ा समय है और बहुत कठिन काम करना शेष है।

आचार्य द्रोणाचार्य आज पूर्ण वेग से अर्जुन के साथ युद्ध कर रहे है और उनको रोके हुए भी हैं। इस बात को भगवान श्री समझ जाते हैं और अर्जुन से कहते हैं कि इस समय अब यहाँ थमना करना युद्धनीति के विरुद्ध है। समय कम है और कार्य बड़ा करना है। अतः यहाँ से हट जाना ही उचित है।

डॉ० देवचरण प्रसाद [redacted]
एसो० प्रो० हिन्दी 05/06/21
रा० उ० सं० महाविद्यालय हुलसेना, पूर्णियाँ